आम सेव संतरा

चित्र।

उपरोक्त चित्र में OX-अक्ष पर वस्तु की इकाइयाँ तथा OY-अक्ष पर सीमान्त उपयोगिता को दिखाया गया है। AB सीमान्त उपयोगिता बिन्दु की रेखा है। उपरोक्त चित्र से स्पष्ट है कि जब उपभोक्ता 3 रु. आम पर, 2 रु. सेव पर तथा 1 रु. सन्तरा पर व्यय करेगा तो उसे अधिकतम संतुष्टि प्राप्त होगी, क्योंकि उसी बिन्दु पर तीनों वस्तुओं से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता एक-दूसरे के बराबर है।

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम की मान्यताएँ
(ASSUMPTIONS OF THE LAW OF EQUI-MARGINAL UTILITY)

इस नियम की प्रमुख मान्यताएँ निम्नलिखित हैं :

(i) उपभोक्ता विवेकशील होता है अर्थात् वह अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिये अपनी सीमित आय को सोच-समझकर खर्च करता है। (ii) मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता स्थिर (अपरिवर्तित) रहती है। (iii) व्यक्ति की आय रुचि, फैशन आदि अपरिवर्तित रहते हैं। (iv) उपयोगिता मुद्रा में मापी जा सकती है। (v) बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति है। (vi) वस्तुओं का सूक्ष्म विभाजन किया जा सकता है। (vii) उपभोक्ता अपनी आय को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में व्यय करता है। (viii) वस्तुओं की कीमतें स्थिर हैं तथा उपभोक्ता उन कीमतों की जानकारी रखता है।

सम-सीमान्त उपयोगिता नियम का महत्व
(IMPORTANCE OF LAW OF EQUI-MARGINAL UTILITY)

अर्थशास्त्र के अन्तर्गत सम-सीमान्त उपयोगिता नियम का व्यापक महत्व है। यदि इसे **'अर्थशास्त्र की रीढ़'** कहा जाय तो इसमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी। यह नियम अर्थशास्त्र के सभी क्षेत्रों में लागू होता है, अतः इसे एक सार्वभौम नियम (Universal law) भी कहा जा सकता है। इसकी महत्ता पर प्रकाश डालते हुए **प्रो. मार्शल** ने कहा है, **"सम-सीमान्त उपयोगिता का नियम आर्थिक खोज के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में फैला हुआ है।"** विभिन्न क्षेत्रों में इसके महत्व निम्न-लिखित हैं :

1. **उपभोग के क्षेत्र में महत्व** (Importance in the field of Consumption)—इस नियम से उपभोक्ताओं को इस बात की जानकारी होती है कि वे अपनी सीमित आय का किस

प्रकार प्रयोग करें कि वे अपनी असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति कर अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त कर सकें। इसके अलावा इस नियम से उपभोक्ताओं को इस बात की भी जानकारी होती है कि वे अपनी आय में से कितना वर्तमान में खर्च करें तथा कितना भविष्य के लिये संचय कर रखें। इसके लिये उपभोक्ता अपनी मौद्रिक-आय का वर्तमान उपभोग एवं भावी उपभोग के बीच इस प्रकार वितरण करता है कि मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता दोनों परिस्थितियों में बराबर हो।

इसी प्रकार इस नियम से उपभोक्ताओं को वैकल्पिक प्रयोग वाली वस्तुओं के प्रयोग के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त होती है। यदि किसी उपभोक्ता के पास एक ऐसी वस्तु है, जिसका वैकल्पिक प्रयोग सम्भव है तो वह उस वस्तु का प्रयोग इस प्रकार करेगा कि विभिन्न प्रयोगों से प्राप्त वस्तु की सीमान्त उपयोगिता आपस में बराबर हो जाये। उदाहरण के लिये, बिजली का प्रयोग फ्रीज चलाने, टी. वी. चलाने, एयर कूलर चलाने, पंखा चलाने, रेडियो बजाने, बत्ती जलाने, रूम हीटर चलाने, खाना पकाने आदि में इस प्रकार करेगा ताकि प्रत्येक उपभोग से प्राप्त होने वाली सीमान्त उपयोगिता आपस में बराबर हो जाये।

2. **उत्पादन के क्षेत्र में महत्व** (Importance in the field of Production)—किसी भी उत्पादक का मुख्य उद्देश्य यह होता है कि वह कम से कम लागत पर वस्तुओं का उत्पादन कर अधिकतम लाभ की प्राप्ति कर सके। इस सन्दर्भ में इस नियम से उसे काफी मदद मिलती है। अधिकतम लाभ के उद्देश्य की पूर्ति तभी हो सकती है जब महँगे साधनों का प्रतिस्थापन सस्ते साधनों से तब तक किया जाये जब तक सस्ते व महँगे साधनों से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता बराबर नहीं हो जाये। उदाहरण के लिये, यदि श्रम की सीमान्त उत्पादन पूँजी से अधिक हो तो उत्पादक पूँजी का प्रतिस्थापन श्रम द्वारा करेगा। यह प्रतिस्थापन का कार्य अन्य साधनों के साथ करता रहेगा और प्रतिस्थापन का यह कार्य तब तक चलता रहेगा जब तक कि सभी साधनों से प्राप्त सीमान्त उत्पादन बराबर न हो जाय।

3. **विनिमय के क्षेत्र में महत्व** (Importance in the field of Exchange)—निर्धारित प्रतिफलस्वरूप जब किसी वस्तु का स्वामित्व परिवर्तित होता है, तो इसे विनिमय कहते हैं। वस्तु के विनिमय के क्रम में उपभोक्ता तथा उत्पादक दोनों ही अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। अतः वस्तु की कीमत वहीं निर्धारित होती है जहाँ दोनों की सीमान्त उपयोगिता बराबर हो। कीमत अधिक होने पर वस्तु की माँग घटने लगती है, क्योंकि उपभोक्ता को प्राप्त होने वाली उपयोगिता की दर भी घटने लगती है। इसके विपरीत, माल (Goods) नहीं बिकने से विक्रेता के पास माल का स्टॉक बढ़ने लगता है, जिससे उसकी सीमान्त उपयोगिता घटने लगती है। अतः वस्तु का मूल्य उस बिन्दु पर निर्धारित होता है, जहाँ दोनों पक्षों को प्राप्त सीमान्त उपयोगिता बराबर होती है। इस प्रकार, विनिमय के क्षेत्र में भी सम-सीमान्त उपयोगिता नियम का कम महत्व नहीं है।

4. **वितरण के क्षेत्र में महत्व** (Importance in the field of Distribution)—उत्पादन का कार्य उत्पादन के विभिन्न साधनों के संयोग (Combination) से सम्पन्न होता है, अतः उत्पादन से प्राप्त लाभ का वितरण उन तमाम साधनों के बीच किया जाना आवश्यक होता है, जिनमें कि सम-सीमान्त उपयोगिता नियम की आवश्यकता पड़ती है। उत्पादन के साधनों को दिये जाने वाले पुरस्कार की राशि उनकी सीमान्त उत्पादकता (Marginal productivity) के आधार पर निर्धारित की जाती है। उत्पादक किसी साधन का प्रयोग तब तक करता है, जब तक उस साधन की सीमान्त उत्पादकता उसे दिये गये पुरस्कार (जैसे—मजदूरी, ब्याज, मुनाफा/लाभ, लगान) के बराबर न हो जाय।

5. **राजस्व के क्षेत्र में महत्व** (Importance in the field of Public Finance)—किसी भी सरकार का यह उद्देश्य होता है कि वह आय और व्यय का समायोजन (Adjustment) इस प्रकार करे ताकि जनता का कल्याण अधिकतम हो सके। अधिकतम कल्याण उसी बिन्दु पर

हो सकता है, जहाँ सरकार द्वारा किये गये व्ययों से एवं जनता द्वारा चुकाये गये करों (Taxes) से प्राप्त असन्तुष्टि (किये गये त्याग) दोनों आपस में बराबर हों। स्पष्ट है, सम-सीमान्त उपयोगिता नियम राजस्व के क्षेत्र में भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

नियम की आधुनिक व्याख्या : आनुपातिकता का नियम
(MODERN INTERPRETATION OF THE LAW : LAW OF PROPORTIONALITY)

आधुनिक अर्थशास्त्रियों के द्वारा सम-सीमान्त उपयोगिता नियम की व्याख्या नये ढंग से की गयी है, जिसे अनुपातिकता का नियम भी कहते हैं। इनका मत है कि किसी वस्तु से अधिकतम सन्तुष्टि तभी प्राप्त हो सकती है, जब क्रय की जाने वाली विभिन्न वस्तुओं में से प्रत्येक के मूल्य और उसकी सीमान्त उपयोगिता के बीच प्रत्येक दशा में समान अनुपात हो। इसे निम्नांकित ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है :

$$\frac{\text{A वस्तु की सीमान्त उपयोगिता}}{\text{A वस्तु की कीमत}} = \frac{\text{B वस्तु की सीमान्त उपयोगिता}}{\text{B वस्तु की कीमत}} = \frac{\text{C वस्तु की सीमान्त उपयोगिता}}{\text{C वस्तु की कीमत}}$$

यदि A वस्तु की कीमत बढ़ती है तो B वस्तु का उपयोग होने लगेगा और इसी प्रकार जब B वस्तु की कीमत बढ़ेगी तो C वस्तु का उपयोग होने लगेगा और अन्त में एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हो जायेगी जब माँग और पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों के कारण तीनों वस्तुओं का अनुपात समान हो जायेगा और यही अधिकतम सन्तोष की स्थिति होगी।

आधुनिक अर्थशास्त्रियों के इस दृष्टिकोण के कारण अब हमें प्रत्येक इकाई के द्रव्य की उपयोगिता मापने की आवश्यकता नहीं होगी। हमारा सम्बन्ध प्रत्येक वस्तु की कीमत और उसकी सीमान्त उपयोगिता का अनुपात समान रखने से है। किन्तु इससे हम प्रतिस्थापन से होने वाले हानि-लाभ को माप नहीं सकते।